विचार बिन्दु

श्रद्धा और विश्वास ऐसी जड़ी बूटियाँ हैं कि जो एक बार घोल कर पी लेता है वह चाहने पर मृत्यु को भी पीछे धकेल देता है।

–अमृतलाल नागर

कोचिंग हब में आत्महत्याओं का अंतहीन सिलसिला

एक मोटे अनुमान के अनुसार हजारों करोड़ से अधिक सालाना कारोबार वाली शिक्षा नगरी कोटा को लगता है नजर लग गई है। देश भर में विख्यात कोटा में उज्ज्वल भविष्य का समना संजोयें आने वाले युवाओं द्वारा खुदकशी करने का अंतहीन सिलसिला जारी है। इसी साल के ही आंकड़ों पर नजर डाली जाए तो एक दर्जन से अधिक युवाओं ने सपनिले भविष्य के स्थान पर मौत को गले लगाने में किसी तरह का संकोच नहीं किया। यह कोई इस साल के ही हालात नहीं है अपितु यह पिछले कुछ सालों से लगातार चला आ रहा सिलसिला है। हांलाकि कोरोना काल में सब कुछ बंद होने से अवश्य कुछ सुधार दिखाई दिया था, पर हालात जस के तस देखने को मिल रहे हैं। यहां तक कि आए दिन इस तरह की खबरें आम होती जा रही है।

आखिर यह स्थिति क्यों होती जा रही है। यह अपने आप में विचारणीय मुद्दा हो जाता है। आखिर इसके लिए दोषी किसे माना जाए? स्वयं बच्चे को, अति महत्वाकांक्षी पेरेंट्स को, कोचिंग संस्थानों को, प्रशासन को या फिर हालातों को? हांलाकि किसी को दोषी ठहराने से समस्या का हल नहीं निकलने वाला हैं। यह भी सही है कि इन हालातों के लिए सरकार सहित सभी गंभीर है। तात्कालीक समाधान भी खोजे जाते रहे हैं पर परिणाम नहीं आ रहे। इंजीनियर या डॉक्टर बनने का सपना संजोए बच्चों का बीच राह में मौत को गले लगा लेना हृदय विदारक होने के साथ ही साथ कहीं गहरे तक सोचने को मजबूर कर देता है। आखिर क्या कारण है कि उज्ज्वल भविष्य व गरिमामय प्रोफेसन से जुड़ने की तैयारी की राह पर उतरते युवा इस कदर निराशा के दलदल में फंस जाते हैं कि बिना आगे-पीछे सोचे मौत को गले लगाने में हिचकते भी नहीं हैं।

कोटा में कोचिंग कर रहे छात्रों में जिस तेजी से आत्महत्याओं का दौर चला है वह अपने आप में गंभीर होने के साथ ही बच्चों के परिजनों, कोटावासियों या राजस्थान ही नहीं देश के मनोवैज्ञानिकों, राजनेताओं, प्रशासन, शिक्षाविद्ों को गहरी सोच में डाल दिया है। कोरोना काल में कोचिंग गतिविधियां बंद होने से आत्महत्याओं का यह अंतहीन सिलसिला कुछ कम अवश्य हुआ पर कोचिग संस्थानों के चालू होते ही आत्महत्याओं का जो सिलसिला शुरु हो गया है वह अपने आप में चिंतनीय और समाधान खोजने को मजबूर कर देता है। यह कोई शिक्षा नगरी कोटा का नाम खराब करने का प्रयास नहीं है अपितु शिक्षा नगरी में आए दिन हो रही घटनाओं का विश्लेषण है। यह अपने आप में गंभीर है और इसके लिए केन्द्र व राज्य सरकार दोनों ही गंभीर भी है।

यही कोई दो माह पहले कोटा में कोचिंग कर रही छात्रा कृति ने सरकार और अपने माता-पिता को मृत्युपूर्व अपने नोट में जो संदेश दिया है वह बहुत कुछ बयां करता है। अपनी मां को लिखा कि– "आपने मेरे बचपन और बच्चा होने का फायदा उठाया और मुझे विज्ञान पसंद करने के लिए मजबूर करती रही।..... इस तरह की मजबूर करने वाली हरकत 11 वीं पढ़ रहीं मेरी छोटी बहन के साथ मत करना, वो जो करना चाहती है, जो पढ़ना चाहती है वह उसे करने देना" कुछ इसी तरह से सरकार को लिखा है कि अगर वे चाहते हैं कि– "कोई बच्चा नहीं मरे तो जितनी जल्दी हो सके इन कोचिंग संस्थानों को बंद करवा दें, यह कोचिंग खोखला बना देती है।" कृति के इन संदेशों में कितनी सचाई और दर्द छिपा है यह अपने आप बयां कर रहा है। आखिर बच्चों का बचपन बड़ों की महत्वाकांक्षा के आगे टिक नहीं पा रहा है और गला काट प्रतिस्पर्धा में ब्रच्चों को मानसिक दबाव और कुंठा की राह धकेल रहा है। यह साफगोई है तो सचाई भी यही हैं।

> **कृति के इन संदेशों में कितनी सचाई और दर्द छिपा है यह अपने आप बयां कर रहा है। आखिर बच्चों का बचपन बड़ों की महत्वाकांक्षा के आगे टिक नहीं पा रहा है और गला काट प्रतिस्पर्धा में ब्रच्चों को मानसिक दबाव और कुंठा की राह धकेल रहा है।**

इसमें कोई दो राय नहीं कि औद्योगिक नगरी से कोटा ने शिक्षा नगरी के रुप में समूचे देश में पहचान बनाई है। पर संस्थान कारोबार में बदल जाते हैं तो उनके परिणाम भी भिन्न हो जाते हैं। आईआईटी और इंजीनियरिंग में प्रवेश दिलाने की कोचिंग के लिए कोटा शहर की पहचान पूरे देश में कोचिंग हब के रुप में है। पिछले कुछ दशकों में कुकुरमुत्ते की तरह कोटा में कोचिंग संस्थानों ने कारोबार के रुप में पांव पसारे हैं। अकेले कोटा में ही कोचिंग के लिए आने वाले छात्र-छात्राओं की तादाद यही कोई दो से ढाई लाख तक है। एक मोटे अनुमान के अनुसार देश में कोचिंग का व्यवसाय कोई 20 हजार करोड़ रुपए से अधिक का माना जा रहा है। इसमें से अकेले कोटा में कोचिंग का कारोबार एक हजार करोड़ रुपए से अधिक है। साफ है कोचिंग पूरी तरह से व्यवसाय का रुप ले चुकी है, ऐसे में मानवीय संबंध या गुरु-शिष्य के संबंध कोई मायने नहीं रखते। अपनत्व या आपसी संवेदना तो दूर-दूर की बात है। कोचिंग संस्थान पांच से छह घंटों तक कोचिंग कराते है शेष समय हॉस्टल में अध्ययन में बीतता है। पहले से ही मानसिक दबाव में रह रहे बच्चें कोचिंग संस्थानों की नियमित परीक्षाओं के माध्यम से रेंकिंग के दबाव में रहते संवेदनशील बच्चे इस दबाव को सहन ही नहीं कर पाते। कोचिंग संस्थानों के लिए तो यह निरा व्यवसाय बन जाने के कारण उन्हें बच्चों के मनोविज्ञान को समझने की ना तो जरुरत महसूस है और ना ही परवाह। दूसरी तरफ परिजन उंचे उंचे ख्वाब देखते हुए बच्चों का इन कोचिंग संस्थानों में प्रवेश कराकर अपने दायित्व की इतिश्री कर लेते हैं।

कोटा में चल रहे आत्महत्याओं के दौर से केन्द्र व राज्य सरकार दोनों ही चिंतित है। सरकार और मनोविज्ञानियों ने अपने स्तर पर प्रयास भी शुरु किए पर वह अभी कारगर नहीं हो पा रहे हैं। कोरोना से पहले केन्द्र सरकार ने आत्म हत्या के कारणों का अध्ययन कराने के लिए कमेटी गठित की। तो जिला प्रशासन भी सक्रिय हुआ। बच्चों के मानसिक दबाव को कम करने के लिए कोचिंग विद फन का कंसेप्ट लाया गया। जिला प्रशासन ने कोचिंग संस्थानों के लिए गाइड लाइन जारी करने के साथ ही होप हेल्प लाईन को शुरु किया गया। जिला प्रशासन की दखल के बाद फन डे, योग, मेडिटेशन के माध्यम से पढाई के तनाव को कम करने के प्रयास शुरु किये गए। परिजनों ने भी अपने बच्चों से निरंतर संपर्क बनाना शुरु किया। काउसलिंग व स्क्रीनिंग जैसी व्यवस्थाएं भी नियमित करने का प्रयास आरंभ हुआ। कोटा में कोचिंग छात्रों की आत्म हत्या के कारण कोई भी रहे हो पर यह बेहद चिंतनीय है। हमें कोटा की पहचान को बनाए रखना है तो यहां कोचिंग लेने आने वाले बच्चों के आत्मबल को भी मजबूत करना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

परिवर्तन को तरसती पहली सीढ़ी

डॉ. रामावतार शर्मा

नीलोत्पल मृणाल का एक बड़ा यथार्थवादी और खोखली विचारधाराओं पर आक्रमण करता उपन्यास है जिसका शीर्षक है 'औघड़'। चमार टोले का पवित्तर दास शहर जाकर पैसे वाला बन जाता है और अपने मोहल्ले में काली मंदिर की स्थापना पर पूरे गांव को प्रसादी के लिए आमंत्रित करता है। धार्मिक भावनाओं से आकंठ डूबे समाज में खुशी नहीं कि काली का मंदिर बना है पर इर्ष्या और विद्वेष है कि एक चमार ने इतना धन कैसे कमाया और उसके घर का प्रसाद कौन खाने जाए। जैसा कि हम सब देखते रहे हैं और हमारे गांव में होता रहा है, पवित्तर दास का साथ दिया गांव के गांजा, भांग पीने वाले तथाकथित सवर्ण युवकों एवं देशी घी की मिठाइयों के स्वाद प्रेमी कुछ गांव वालों ने।

यहां एक बात हर तरफ देखी जाती है कि हमारे यहां जातिवाद ने देवी देवताओं और ईश्वर को भी विभाजित कर दिया। अपनी जाति पर गर्व तक तो ठीक हो सकता है पर दूसरी जातियों को हीन समझने का अधिकार भला इन लोगों को किसने दिया है?

भारत के तथाकथित संस्कृति रक्षक सदियों से अपने ही समाज के वंचित समूहों की आवाजों को सुनने के मामले में बहरे बने रहे हैं। शब्द तो बड़े बड़े गढ़ लिए पर व्यवहार में सामाजिक और आर्थिक विषमताओं पर बोलने का न तो साहस जुटा पाए और ना ही कभी इसकी इच्छा शक्ति रखी। जैसे-तैसे अपनी स्वार्थसिद्धि करते ये लोग आकर्षक शब्दावली की ओट में निचले तबके के शोषण में सहायक ही रहे है। परिणाम यह हुआ कि भारतीय समाज विभिन्न तरह के जातीय समूहों में विभक्त हो गया जहां पर जातियां एवम् उपजातियां ही एक नागरिक का सम्मान या अपमान तय करने लगी। यह एक पूर्णतया दुर्भाग्यपूर्ण और अमानवीय स्थिति है जहां एक व्यक्ति को महज उसकी पैदाइश के अनुसार ही पहचाना जाने लगे। एक जैविक संयोग किसी जीव के भविष्य को भला कैसे निर्धारित कर सकता है?

1970 के दशक में एक झलक सी उभरी थी कि भारत इस सदियों पुराने मानवता विरोधी माहौल से ऊपर उठ जाएगा पर तिकड़मबाज राजनेताओं में जाति का जहर महानगरों तक में फैला दिया और अब तो लगने लगा है कि भारतीय समाज वैसा ही रहेगा जैसा रहीम ने 700 साल पहले कहा था– "रहिमन प्रीत ना कीजिए, जिस खीरा ने कीन बाहर से तो दिल मिले, भीतर फांकें तीन ।।"

यदि ऐसा ना होता तो वो क्या कारण हैं जब भारत सरकार ने कुल आबादी के 8.6 प्रतिशत आदिवासियों की जमीनें अपने अधिकार में ली जोकि सरकार द्वारा अधिकृत की गई भूमि का 50 प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा है तो देश में कहीं से कोई आवाज नहीं उठी? यहां चुरू, झुंझुनूं या झोटवाड़ा जैसी जगह रसूखदारों के मकान बचाने के लिए ओवरब्रिज की चौड़ाई अव्यावहारिक रूप से पतली कर दी जाती है और वहां आदिवासियों को विस्थापित कर कोई अन्य व्यवस्था या रोजगार तक उपलब्ध नहीं करवाया जाता है। जब कोई आदिवासी अधिकार मांगता है जो वह राष्ट्र विरोधी घोषित हो जाता है जो हमेशा संदेहास्पद लगता रहा है क्योंकि इस खेल में पारदर्शिता का पूरा अभाव है। स्वयं सरकारी आंकड़ों के अनुसार झारखंड में 89 प्रतिशत और ओडिशा में 70-75 प्रतिशत खेतिहर मजदूर या अति लघु किसान हैं और इनमें से 55 प्रतिशत के करीब लोग भोजन असुरक्षा में हर एक दिन गुजारते हैं।

अब चाहें जानबूझ कर हो रहा हो या अनजाने में हमारे देश में एक षडयंत्र सा हो रहा है कि लोगों को बांट के रखो। आदि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, रामानंद, संत तुकाराम, संकरदेव, कृष्ण चैतन्य, रविदास, कबीर, मीरा और चोखा मेला के प्रयत्नों के बावजूद हम जातियों में बंधे ही नहीं रहे बल्कि इन संतों के शिष्यों के रूप में नई जातियां विकसित हो गई। सिख गुरुओं ने एकरूप समाज का संदेश देकर एकता के प्रयास किए पर आज कितनी ही तरह के सिख नजर आते हैं। इस्लाम में मुसावत (समानता) की बात तो बड़े फख्र से होती है पर उनका समाज अशरफ (उच्च कोटि) और निम्न कोटि पसमांदा (असलफ और अरजाल) में बड़े स्तर तक बंटा हुआ है। पसमांदा का मतलब होता है पीछे छूटे हुए लोग। इन सब विभक्तियों का बड़ा कारण समाज के पिछड़े तबकों में शिक्षा का अभाव है। अशिक्षित लोगों को हिंसक भीड़ में बदलना आसान होता है इसलिए इन लोगों में राष्ट्र प्रेम जैसी भावनाएं विकसित नहीं हो पाती है जिसके लिए एक तरह से देश के प्रबुद्ध लोग ही जिम्मेदार मानें जायेंगे।

देश में एस सी, एस टी और ओ बी सी के लिए आरक्षण है तो इनमें से कोई भी यदि अपने जीवन में आगे बढ़ता है तो उसको दिल से कोई सम्मान नहीं मिलता पर ऐसा करने वाले भूल जाते हैं कि वे लोग भी सदियों से कुछ व्यवसायों पर एकाधिकार जमाए बैठे हैं। आरक्षण में भी सिर्फ कुछ परिवारों ने एकाधिकार जमा रखा है और वे अपनी जाति के बादशाह बन बैठे हैं और इस तरह से जाति में उप जाति उत्पन्न होती जा रही हैं। यहां सब कुछ उलझता सा जा रहा है और हर तरफ वैमनस्य नजर आने लगा है। हर तरफ फैल रहे निजीकरण के फलस्वरूप आरक्षण अपना महत्व खोता जायेगा और वातावरण में और कटुता बढ़ेगी। क्या हम ऐसा कर पाएंगे कि लोगों को पहली सीढ़ी से ऊपर उठाया जाए ताकि बड़े स्तर पर संभावित सामाजिक कटुता पर अंकुश लगे? क्या हमारा राजनीतिक एवम् सामाजिक नेतृत्व इतना संवेदनशील और सक्षम है कि कोई दूरगामी योजना को सोच दे सके?

यहां एक सवाल उभरता हैं क्या इस तरह की समस्याओं का कोई सम्मानजनक निवारण संभव है? उपाय तो है पर इसके लिए व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दोनों तरह की चेतना चाहिए होती है। सिर्फ शासकीय परिवर्तनों से बड़ी सामाजिक व आर्थिक समस्याओं का समाधान नहीं निकल सकता है क्योंकि संसाधनों पर कब्जा करने में अगड़े और पिछड़े नेता या अधिकारी अपने ही समाज के लोगों को धक्का देने में झिझकते नहीं हैं। परिवर्तन व्यक्तिगत स्तर पर होगा तो ही स्थाई परिवर्तन होगा। लोगों को भाग्य के भरोसे जीने की आदत पड़ जाती है जो कि एक निराशावादी विचारधारा है। कर्म कुशलता के बिना भाग्य को भी घुण लग जाता है और कर्म किसी के भी भाग्य को बदलने में सक्षम है। तजुर्बे की कोई जाति नहीं होती, धर्म भी नहीं होता। कार्य में निपुणता का प्रशिक्षण संभव है इसलिए यदि इन क्षेत्र पर बड़ा कार्य किया जाए तो संभव है कि 200 करोड़ जनसंख्या की तरफ अग्रसर इस देश की आबादी में कुछ शकून आ पाए वरना वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने के सारे दावे ज्यादातर भारतीयों के लिए दिवा स्वप्न बन कर रह जायेंगे और समय के साथ देश में हर तरफ अपराध, हिंसा, लूटपाट और अराजकता आदि विस्तार लेने लगेंगे।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

"सम" में बी.एस.एफ. पार्क का उद्घाटन

पार्क में पर्यटक बीएसएफ जवानों के विभिन्न गतिविधियों का अनुभव कर सकते हैं

जैसलमेर में बी.एस.एफ. सम पार्क का महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल पंकज कुमार सिंह (दाएं) ने विधिवत् उद्घाटन किया।

जैसलमेर, (निसं)। 21 दिसम्बर 2022 को पंकज कुमार सिंह, महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल, नई दिल्ली ने बी.एस.एफ. पार्क , सम, जैसलमेर का विधिवत् उद्घाटन किया।

बीएसएफ सम पार्क में पर्यटक बीएसएफ जवानों के जंग की कहानियाँ, अन्तर्राष्ट्रीय बॉर्डर, सीमा चौकियों, बँकर्स, ऊटों पर गस्त, हथियार प्रदर्शनी, फॉटो गैलरी, ऑडियो-विडियो विजुवल हॉल, फायरिंग सिमुलेटर, चिल्ड्रन पार्क, कॅफेटेरिया, सॉवनियर शॉप आदि प्रकार की गतिविधियों का अनुभव कर सकते हैं। इस पार्क को आमजन के लिए आज खोला गया है, जहाँ पर बॉर्डर नहीं जा सकने वाले पर्यटक भी बॉर्डर की वास्तविकता से रुबरु हो सकेगें। पंकज सिंह ने जैसलमेर दौरे के दौरान राजस्थान सीमान्त के सभी वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात कर राजस्थान फ्रंटियर की वर्तमान सुरक्षा व्यवस्थाओं के बारे में विस्तृत विचार-विमर्श भी किया।इस मौके पर महानिदेशक सीमा सुरक्षा बल के अलावा, पी. वी रामाशास्त्री, अपर महानिदेशक पश्चिमी कमान, चंडीगढ़, फ्रंटियर राजस्थान के वरिष्ठ अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी एवं जवान उपस्थित रहे।

- **पार्क में पर्यटक भी बॉर्डर की वास्तविकता से हो सकेंगे रुबरू**

'कृषि उत्पादन बढ़ाने और खाद्य सुरक्षा के लिए बहु आयामी रणनीति अपनानी होगी'

उदयपुर, (कासं)। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर का 16 वां दीक्षांत समारोह बुधवार को गरिमापूर्ण तरीके से संपन्न हुआ। कुलाधिपति एवं राज्यपाल, राजस्थान कलराज मिश्र ने दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता की। राज्यपाल दोपहर समारोह स्थल-विवेकानंद सभागार में पहुंचे जहाँ उनके स्वागत के पश्चात् दीक्षांत समारोह प्रारंभ हुआ। समारोह के प्रारम्भ में राज्यपाल ने उपस्थित विद्यार्थियों, अतिथियों एवं अभिभावकों को संविधान की शपथ दिलाई। इस अवसर पर 954 उपाधियां प्रदान की गई।

राज्यपाल कलराज मिश्र ने वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप को नमन किया। उन्होंने कहा कि दीक्षांत समारोह विद्यार्थियों के लिए जीवन का नया सोपन है जिससे वे अपने अर्जित ज्ञान के प्रकाश को समाज और राष्ट्र के विकास के लिये चहुँ ओर फैलाएं। इस अवसर पर उन्होंने सभी पदक विजेताओं और उपाधि प्राप्तकर्ता विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी। राज्यपाल ने कहा कि कृषि एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में आपका यह विष्वविद्यालय शोध और षिक्षा का देष का प्रमुख केन्द्र बने। इसके लिए जरूरी है कि नवाचार अपनाते हुए ऐसे विषयों पर विष्वविद्यालय ध्यान दें जिससे खेतों में उन्नत पैदावर ही नहीं हो बल्कि स्थानीय जलवायु के अनुसार खेती आगे बढ़े। कृषि क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों के दौरान तेजी से विकास और पैदावार में भी तेजी से वृद्धि हुई है परन्तु इसके साथ ही मिट्टी की उर्वरा षक्ति क्षीण हुई है, खेती का क्षेत्र घटने लगा है। इसके साथ ही और भी बहुत सारी समस्याएं कृषि क्षेत्र में उत्पन्न हुई है। मैं चाहता हूं, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्ष्वद्यालय इन समस्याओं के प्रभावी समाधान हेतु नई तकनीकों के उपयोग के साथ ही ऐसी शोध विकसित करें जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढे, विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन हो साथ ही खेती में रासायनिक उर्वरकों का कम से कम उपयोग हो। ऐसे उपाय कृषि वैज्ञानिक सुझाएं जिससे खेत-खलिहानों में समृद्धि की बयार आए। हमें हमारी उस प्राचीन संस्कृति को सहेजने की जरूरत है। खेती के पारम्परिक तरीकों के साथ कृषि विज्ञान की हमारी वैदिक परम्परा और लोक से जुड़े ज्ञान का उपयोग हो इस पर वृहद स्तर पर चिंतन करने की आज जरूरत है। उन्होंने कहा कि कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी व खाद्य सुरक्षा के अंतर्गत हमें अब बहु-आयामी रणनीति अपनानी होगी।

कुलाधिपति योग्य छात्र छात्राओं को उपाधि एवं स्वर्ण पदक प्रदान किये। इस दीक्षांत समारोह में भी बेटियों ने पदक हासिल करने में बाजी मारी है, इनमे से 12 छात्रों और 23 छात्राओं ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया है जिसकी राज्यपाल ने भी प्रशंसा की। उन्होंने सभी उपाधियां और पदक पाने वाले विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को बधाई दी।

कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने विश्वविद्यालय प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि यह हमारे लिए हर्ष का विषय है कि विश्वविद्यालय का कृषि शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार जैसे सभी मोर्चा पर श्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है। आईसीएआर रैंकिंग में भी हमने विगत वर्ष 15 वीं रैंक प्राप्त की है जो की 2 साल पहले 51 वीं थी। एमपीयूएटी को समूचे राजस्थान में श्रेष्ठतम विश्वविद्यालय के रूप में कुलाधिपति पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव मिला है। राज्यपाल के स्मार्ट विलेज इनिशिएटिव पर गोद लिए ग्राम मदार में भी हमारा श्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है जिसके फलस्वरूप हमारे कार्यों और मदार को सभी विश्वविद्यालयों के लिए आदर्श ग्राम के रूप में रखा गया है।

आपके आदेशों के प्रतिपालन में हम एम पी यूएटी में एक उत्कृष्ट शैक्षणिक माहौल बनाए रखने में सक्षम रहे हैं। फलस्वरूप इस दीक्षान्त समारोह में 760 स्नातक, 126 स्नातकोत्तर और 68 विद्यावाचस्पति विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की जा रही हैं। साथ ही कुलाधिपति के करकमलों से 13 स्नातक, 17 स्नातकोत्तर और 2 विद्यावाचस्पति छात्रों को उनके संबंधित संकायों में योग्यता के क्रम में प्रथम स्थान हासिल करने पर स्वर्ण पदक प्रदान किया जा रहा है। सामुदायिक व व्याहारिक विज्ञान महाविद्यालय के होनहार विद्यार्थी यथार्थ शर्मा को कुलाधिपति पदक से भी सम्मानित किया जा रहा है। 1 छात्रा को जैन इरिगेशन मेडल व 1 छात्रा को फूल सिंह राठौड़ स्मृति पदक भी प्रदान किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनील इंटोदिया ने बताया की विश्वविद्यालय के 16 वें दीक्षांत समारोह में 954 उपाधियाँ प्रदान की गई।

- **पारम्परिक खेती के ज्ञान के साथ अपनाने होंगे नवाचार**
- **महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय का 16 वां दीक्षांत समारोह**

राशिफल गुरूवार 22 दिसम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, ज्येष्ठ नक्षत्र रात्रि 4:03 तक, शूल योग सांय 5:43 तक, विष्टि करण प्रात: 8:45 तक, चन्द्रमा रात्रि 4:03 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा प्रात: 8:45 तक है। आज त्रिस्तुनिक (जैन) है। आज से राष्ट्रीय पौष मास आरम्भ होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:33 तक, चर 11:08 से 12:25 तक, लाभ-अमृत 11:25 से 3:00 तक, शुभ 4:17 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:16, सूर्यास्त 5:34

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। परिवार में आपसी वाद-विवाद बढ़ने का भय बना रहेगा। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिलेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित समस्या का समाधान हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

धनु
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मकर
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

लोक संस्कृति के पर्व शिल्पग्राम उत्सव का आगाज

उदयपुर, (कासं)। झीलों के शहर के शिल्प के आंगन में शिल्पग्राम महोत्सव की शुरूआत बुधवार को हो गई। शिल्प और कला की संस्कृति के रूबरू कराने वाले इस महोत्सव में देश के कई प्रांतों के कलाकार अपनी प्रस्तुति देंगे। बुधवार शाम इस महोत्सव का शुभारंभ राज्यपाल कलराज मिश्र ने पारंपरिक नगाड़ा बजाकर एवं दीप प्रज्ज्वलित कर इसकी शुरूआत की।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि कहा कि शिल्पग्राम जीवन से जुड़ी उत्सवधर्मिता का त्योहार है। भारतीय संस्कृति जीवन से जुड़े संस्कारों से ही प्रत्यक्षत: जुड़ी हुई है। जीवन से जुड़े जो संस्कार हैं, उनसे ही कला उपजती रही है। उन्होंने कहा कि यहां जो स्टॉल लगाए हैं, उनको देखकर स्पष्ट ही यह अनुभूत होता है कि जीवन से जुड़ी परम्पराओं को कैसे कलाकारों ने अपने सृजन में शिल्प, चित्रकला और अन्य कलाओं में उकेरा है। राज्यपाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम में विश्वास करती है। यह सारा विश्व हमारा परिवार है। इसलिए सर्वे भवन्तु सुखिन के भावों से हमारी संस्कृति ओतप्रोत है। हमारे यहां शिल्प शास्त्रों में विविध प्रकार की कलाओं तथा हस्तशिल्पों का विशद् विवेचन किया गया है। शिल्प के अंतर्गत विभिन्न प्रकार से जुड़े हस्तशिल्प, डिजाइन और उनसे जुड़े सिद्धान्तों को वर्णित किया गया है।

दस दिवसीय शिल्पग्राम उत्सव का आगाज राज्यपाल कलराज मिश्र (बीच में) ने नगाड़ा बजाकर किया।

उन्होंने आमजन से आग्रह किया कि वे इन सभी कलाकारों की कलाओं की गहराई में जाएं। इससे पता चलेगा कोई एक कला नहीं यहां सभी कलाओं का मूल है। यही कलाओं का अन्त:संबंध है। इन्हें समझेंगे तो न केवल कलाओं के संसार में आप प्रवेश कर सकेंगे बल्कि मन भी उल्लसित होगा। शिल्पग्राम उत्सव के बहाने लोक संस्कृति से, लोक और जनजातीय कलाकारों की कला से रू-ब-रू होने के जो अवसर मिल रहे हैं, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है।

राज्यपाल मिश्र ने कहा कि उदयपुर का यह शिल्पग्राम देशभर में विख्यात है। सबसे बड़ी बात यह है कि यहां पर राजस्थान, गोवा, गुजरात और महाराष्ट्र की ग्रामीण और स्वदेशी संस्कृति एक साथ अनुभूत की जा सकती है। इन सभी राज्यों के विभिन्न जातीय समुदायों की संस्कृति, उनकी जीवनशैली और परंपराओं को यहां झोपडियों में दर्शाया गया है। राज्यपाल मिश्र ने जयपुर के तमाशा कलाकार व रंगकर्मी दिलीप कुमार भट्ट तथा अहमदाबाद के संस्कृति कर्मी तथा जनजाति कला के उन्नयन में उल्लेखनीय कार्य करने वाले डॉ. भगवान दास पटेल को पद्मभूषण डॉ कोमल कोठारी स्मृति लाइफ टाइम अचीवमेन्ट पुरस्कार प्रदान किया। आरंभ में राज्यपाल ने संगम सभागार में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा बेणेश्वर धाम के संत मावजी महाराज के चोपड़ों में समाहित चित्रों का छायांकन कर प्रलेखन किए गए चित्रों की प्रदर्शनी का शुभारंभ किया।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की निदेशक किरण सोनी गुप्ता ने बताया कि शिल्पग्राम उत्सव में 400 शिल्पकार और 700 लोक कलाकार भाग ले रहे हैं। शुभारंभ समारोह में गोवा के कला एवं संस्कृति मंत्री गोविन्द गावड़े, बेणेश्वर धाम के महंत अच्युतानंद पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र निदेशक किरण सोनी गुप्ता, चुनाव आयुक्त मधुकर गुप्ता, संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट, जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ओएसडी गोविन्द जायसवाल आदि मौजूद रहे।

शिल्पग्राम उत्सव के उद्घाटन अवसर पर मुख्य रंगमंच पर 'समागम' के आयोजन के अंतर्गत 9 राज्यों के सवा दो सौ कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रोलोग से हुई जिसमें दीपों से उत्सव का प्रकाश फैलाया। इसके बाद पश्चिम बंगाल के श्री खोल नृत्य से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। इसके बाद जम्मू कश्मीर रॉफ, असम का बोडई शिखला, उडीसा को गोटीपुआ, महाराष्ट्र का लावणी, गोवा का समई, झारखण्ड का छऊ गुजरात का डांग और पंजाब के भांगड़े की प्रस्तुतियां सम्मोहक रही। अंत में समस्त प्रतिभागियों ने एक साथ एक भारत श्रेष्ठ भारत की थीम पर आकर्षक सामूहिक नृत्य प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

- **शिल्प के आंगन में दिखी चहल-पहल**
- **दस दिन तक चलेगा उत्सव**